CLASS : 12th (Sr. Secondary) **2064/2014**

Series : SS-M/2017

Total No. of Printed Pages : **48**

SET : A, B, C & D

MARKING INSTRUCTIONS AND MODEL ANSWERS

POLITICAL SCIENCE

ACADEMIC/OPEN

(Only for Fresh Candidates)

उप-परीक्षक मूल्यांकन निर्देशों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करके उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें। यदि परीक्षार्थी ने प्रश्न पूर्ण व सही हल किया है तो उसके पूर्ण अंक दें।

General Instructions :

(i) Examiners are advised to go through the general as well as specific instructions before taking up evaluation of the answer-books.

(ii) Instructions given in the marking scheme are to be followed strictly so that there may be uniformity in evaluation.

(iii) Mistakes in the answers are to be underlined or encircled.

(iv) Examiners need not hesitate in awarding full marks to the examinee if the answer/s is/are absolutely correct.

(v) Examiners are requested to ensure that every answer is seriously and honestly gone through before it is awarded mark/s. It will ensure the authenticity as their evaluation and enhance the reputation of the Institution.

(vi) A question having parts is to be evaluated and awarded partwise.

(vii) If an examinee writes an acceptable answer which is not given in the marking scheme, he or she may be awarded marks only after consultation with the head-examiner.

(viii) If an examinee attempts an extra question, that answer deserving higher award should be retained and the other scored out.

(ix) Word limit wherever prescribed, if violated upto 10%. On both sides, may be ignored. If the violation exceeds 10%, 1 mark may be deducted.

(x) Head-examiners will approve the standard of marking of the examiners under them only

after ensuring the non-violation of the instructions given in the marking scheme.

(xi) Head-examiners and examiners are once again requested and advised to ensure the authenticity of their evaluation by going through the answers seriously, sincerely and honestly. The advice, if not headed to, will bring a bad name to them and the Institution.

महत्त्वपूर्ण निर्देश :

(i) अंक-योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। अंक-योजना में दिए गए उत्तर-बिन्दु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएँ।

(ii) शुद्ध, सार्थक एवं सटीक उत्तरों को यथायोग्य अधिमान दिए जाएँ।

(iii) परीक्षार्थी द्वारा अपेक्षा के अनुरूप सही उत्तर लिखने पर उसे पूर्णांक दिए जाएँ।

(iv) वर्तनीगत अशुद्धियों एवं विषयांतर की स्थिति में अधिक अंक देकर प्रोत्साहित न करें।

(v) *भाषा-क्षमता एवं अभिव्यक्ति-कौशल पर ध्यान दिया जाएँ।*

(vi) *मुख्य-परीक्षकों/उप-परीक्षकों को उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करने के लिए केवल Marking Instructions/ Guidelines दी जा रही हैं, यदि मूल्यांकन निर्देश में किसी प्रकार की त्रुटि हो, प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, मूल्यांकन निर्देश में दिए गए उत्तर से अलग कोई और भी उत्तर सही हो तो परीक्षक, मुख्य-परीक्षक से विचार-विमर्श करके उस प्रश्न का मूल्यांकन अपने विवेक अनुसार करें।*

सामान्य निर्देश :

(i) *मूल्यांकन निर्देश में दिए गए उत्तर के अतिरिक्त भी यदि परिक्षार्थी ने अपनी अभिव्यक्ति सही रूप में अन्य रूप से स्पष्ट की है तो भी आप उसे पूर्ण अंक देने में संकोच न करें क्योंकि मूल्यांकन निर्देश केवल सुझावात्मक हैं।*

(ii) *वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर में केवल एक उत्तर को ही सही करें।*

(iii) *लघूत्तरात्मक प्रश्नों में जितने Points पूछे गये हैं उतने ही जाँचें। जो उत्तर प्रश्न के बहुत जनदीक हों व स्पष्ट हों, उसे ही ठीक किया जाए।*

(iv) *मूल्यांकन कार्य में केवल Points को ही महत्त्व न दें, बलकि विषय वस्तु को भी बराबर महत्त्व दिया जाए।*

(v) निबन्धात्मक प्रश्नों में परीक्षार्थी के सामान्य ज्ञान का भी ध्यान रखा जाए।

(vi) प्रश्न-पत्र के सामान्य निर्देश में दर्शाये गए शब्द सीमा का भी मूल्यांकन कार्य में ध्यान रखा जाए।

(vii) सटीक एवं सही उत्तर को मूल्यांकन कार्य का आधार मानते हुए, शून्य से पूर्णांक तक का अंक पैमाना रखने में संकोच न करें।

SET – A

---

1. *वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर :*

(i) (घ) साम्प्रदायिकता 1

(ii) (क) ऑपरेशन विजय 1

(iii) (ख) श्री जय प्रकाश नारायण 1

(iv) (ख) 84 1

(v) (ख) नाइन-इलेवन 1

(vi) (ग) सन् 1971 में 1

(vii) (क) जेनेवा में 1

(viii) (घ) वर्ष 2002 में 1

एक शब्द में उत्तर दें :

(ix) सन् 1964 में 1

(x) श्री लाल बहादुर शास्त्री ने 1

(xi) श्री लाल डेंगा 1

(xii) श्री वी० पी० सिंह 1

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

(xiii) शीत युद्ध 1

(xiv) मॉस्ट्रिस्ट संधि 1

(xv) विश्व शान्ति 1

(xvi) बहुआयामी 1

अतिलघु प्रश्नों के उत्तर :

2. सन् 1952 से सन् 1967 तक के काल को एक दल की प्रधानता का युग कहा जाता है। 2

3. विकास का मुख्य उद्देश्य लोगों के रहन-सहन के स्तर का विकास करना है। दूसरे शब्दों में लोगों को वे सुविधायें भी मिलनी चाहिए, जिन्हें प्राप्त करके वे अपने जीवन को सुखी और सम्पन्न बना सकें। 2

4. (i) कृषि क्षेत्र का विस्तार व द्विपैदावर पद्धति को अपनाना।

(ii) सिंचाई की सुविधाओं में विस्तार (अथवा अन्य कोई ***दो*** विशेषताएँ)। 2

5. डॉ० राम मनोहर लोहिया प्रसिद्ध समाजवादी नेता तथा विचारक थे। वे गैर-कांग्रेसवाद के रणनीतिकार थे। 2

6. (i) महिलाओं के विरुद्ध अत्याचारों और भेदभावों से उत्पन्न हुई समस्याओं के अध्ययन पर बल देना और उन्हें हल करने के लिए सरकार को परामर्श देना।

(ii) महिलाओं के विकास को रोकने वाले तथ्यों की पहचान करना तथा उन्हें दूर करने के लिए सरकार को परामर्श देना (अथवा अन्य कोई ***दो*** कार्य)। 2

7. (i) तिभागा आन्दोलन

(ii) तेलंगाना आन्दोलन

(अथवा अन्य कोई ***दो*** आन्दोलनों के नाम)। 2

8. बर्लिन की दीवार सन् 1961 में बनी थी और सन् 1989 में इसका विध्वंस हुआ। 2

9. (i) सोवियत गणराज्यों में राष्ट्रीय आकांक्षाओं का उभरना।

(ii) उपभोक्ता वस्तुओं की कमी के कारण नागरिकों में शासन के प्रति असंतोष उभरना।

(अथवा अन्य कोई ***दो*** कारण) 2

10. (i) क्षेत्रीय शांति एवं सुरक्षा स्थापित करना।

(ii) इसके सदस्य देशों में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक तथा प्रशासनिक सहयोग में बढ़ावा देना।

(अथवा अन्य कोई ***दो*** उद्देश्य) 2

11. 'वर्ल्ड सोशल फोरम' नव उदारवादियों द्वारा वैश्वीकरण के विरोध में बनाया गया एक विश्वव्यापी मंच है। 2

लघु प्रश्नों के उत्तर : (मूल्य-बिन्दुओं के आधार पर)

12. ***भारत विभाजन से उत्पन्न समस्यायें :***

(i) भौगोलिक दूरी की समस्या

(ii) उत्तर पश्चिमी प्रांत की समस्या

(iii) देशी रियासतों के विलय की समस्या

(iv) शरणार्थियों की समस्या

(अथवा किन्हीं अन्य ***चार*** समस्याओं का वर्णन) 4

13. ***भारत द्वारा गुट-निरपेक्षता की नीति को अपनाने के कारण :***

(i) भारत के आर्थिक पुर्ननिर्माण के लिए दोनों गुटों का सहयोग आवश्यक।

(ii) स्वतंत्र नीति निर्धारण के लिए आवश्यक।

(iii) भारत का विश्व शान्ति का समर्थक होना।

(iv) पं० नेहरु का गुट-निरपेक्षता की नीति का प्रबल समर्थक होना।

(अथवा अन्य किन्हीं ***चार*** कारणों का वर्णन) 4

14. ***जनता पार्टी की विजय के कारण :***

(i) 1975 में घोषित आपातकाल और आपातकालीन ज्यादतियाँ।

(ii) परिवार नियोजन कार्यक्रम के अन्तर्गत की गई ज्यादतियाँ।

(iii) संजय गाँधी की असंवैधानिक सत्ता के केन्द्र के रूप में भूमिका।

(iv) जनसाधारण में आर्थिक असंतोष का होना।

(अथवा अन्य किन्हीं ***चार*** कारणों का वर्णन) 4

15. ***पंजाब समझौता :*** श्रीमति इंदिरा गाँधी की हत्या के बाद श्री राजीव गाँधी का प्रधानमंत्री बनना, उनका सिक्ख समुदाय को शांत करने का प्रयास करना व अकाली दल के अध्यक्ष संत हरचंद सिंह लोंगोवाल के साथ बातचीत करना दोनों के बीच 24 जुलाई, 1985 को एक समझौता होना, जिसे पंजाब समझौते के नाम से पुकारा जाना।

पंजाब की स्थिति को सामान्य करने में इसका एक महत्त्वपूर्ण कदम होना :

इस समझौते की मुख्य बातें :

(i) इस बात पर सहमति कि चंडीगढ़ पंजाब को दिया जायेगा और हरियाणा पंजाब के सीमा-विवाद को सुलझाने के लिए अलग आयोग बनाया जाना।

(ii) रावी व्यास के पानी बँटवारे के बारे में अलग न्यायाधिकरण की नियुक्ति करना।

(iii) पंजाब में उग्रवाद से प्रभावित लोगों को सरकार द्वारा मुआवजा देना और उनसे सम्मानजनक व्यवहार करना।

(iv) पंजाब में विशेष सुरक्षा बल अधिनियम को वापिस लेना। लेकिन इस समझौते से कुछ लोगों का संतुष्ट न होना और अगस्त 1985 में संतलोंगोवाल की हत्या होना। 4

16. ***अमेरिकी वर्चस्व को चुनौतियाँ :***

(i) अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद

(ii) प्रतिकूल विश्व जनमत

(iii) अमेरिका की संस्थागत बनावट

(iv) नाटो (NATO) के सदस्य देश

(अथवा अन्य कोई ***चार*** चुनौतियों का वर्णन) 4

17. ***श्रीलंका में जातीय संघर्ष :*** सन् 1948 में स्वतंत्र हुए श्रीलंका में अब तक लोकतंत्र कायम परन्तु वहाँ पर सिंघली और तमिल जातियों के संघर्ष की बड़ी समस्या।श्रीलंका की राजनीति में बहुसंख्यक सिंहली जाति का दबदबा, उनका भारत से गये और वहाँ पर बस गये तमिलों के साथ उपेक्षा भरा बर्ताव करना, जिससे वहाँ उग्र तमिल राष्ट्रवाद की आवाज बुलंद होना। सन् 1985 में गठित लिट्टे (LTTE) के द्वारा श्रीलंका की सेना के साथ सशस्त्र संघर्ष होना। लिट्टे द्वारा तमिल हेलम अर्थात् श्रीलंका में तमिलों के लिए अलग राज्य की माँग करना, श्रीलंका के उत्तर-पूर्वी भाग पर लिट्टे का नियंत्रण होना। श्रीलंका की इस समस्या का भारत से जुड़ा होना क्योंकि भारत की तमिल जनता द्वारा भारत सरकार पर तमिलों के हितों की रक्षा के लिए दबाव डालना। 1987 में भारत और श्रीलंका में समझौता होना व भारत की शान्ति सेना को श्रीलंका में भेजना, पर वहाँ की जनता के विरोध के कारण 1989 में वापिस बुलाना। इस समस्या का अभी तक कोई समाधान न हो पाना। 4

18. ***संयुक्त राष्ट्र संघ के सिद्धान्त :***

(i) संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी सदस्य प्रभुसत्ता संपन्न एवं समान हैं।

(ii) सभी सदस्य राज्य चार्टर में दिए गए उत्तरदायित्वों को ईमानदारी के साथ निभाऐंगे।

(iii) सभी सदस्य राज्य अपने विवादों का समाधान, शान्तिपूर्ण ढंग से इस प्रकार करेंगे कि अन्तर्राष्ट्रीय शांति, सुरक्षा तथा न्याय को किसी प्रकार से खतरा न हो।

(iv) सभी सदस्य देश किसी भी अन्य राष्ट्र के विरुद्ध न तो बल प्रयोग करेंगे और न इसकी धमकी देंगे।

(v) जिस राज्य के विरुद्ध U. N. O. कोई कार्यवाई कर रहा हो, उसकी कोई सहायता नहीं करेंगे।

(vi) U. N. O. इस बात का ध्यान रखेगा। कि इसके गैर सदस्य राज्य की विश्व शान्ति और सुरक्षा तथा U. N. O. के सिद्धान्तों का पालन करें।

(vii) U. N. O. किसी भी राज्य के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप नहीं करेगा। 4

19. ***निशस्त्रीकरण की आवश्यकता के कारण :***

(i) शान्ति की स्थापना के लिए आवश्यक

(ii) राष्ट्रों के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए आवश्यक

(iii) आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त करने के लिए आवश्यक

(iv) आणविक संकट से बचने के लिए आवश्यक

(अथवा अन्य किन्हीं ***चार*** कारणों का वर्णन) 4

निबन्धात्मक प्रश्नों के उत्तर (मूल्य-बिन्दुओं के आधार पर)

20. ***भारत में साम्प्रदायिकता की उत्पत्ति व विकास के कारण :***

(i) अंग्रेजों की 'फूट-डालो और शासन करो, की नीति

(ii) धार्मिक कट्टरता

(iii) मुसलमानों का आर्थिक पिछड़ापन

(iv) साम्प्रदायिक राजनीतिक दल एवं अन्य संगठन

(v) अल्पसंख्यकों में असुरक्षा की भावना

(vi) राजनीतिक नेताओं द्वारा अल्पसंख्यकों को खुश करने की नीति अपनाना।

(vii) पाकिस्तान की भूमिका

(आदि साम्प्रदायिकता की उत्पत्ति और विकास के कारणों का वर्णन) 6

अथवा

नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था की विशेषताएँ :

(i) विश्व के आर्थिक ढाँचे का पुनःनिर्धारण

(ii) प्राकृतिक संसाधनों पर राष्ट्रीय प्रभुसत्ता

(iii) व्यापार में संरक्षणवाद की समाप्ति

(iv) तकनीकी हस्तांतरण पर बल

(v) बहुराष्ट्रीय निगमों के लिए एक निश्चित आचार संहिता की वकालत

(vi) ब्रेन-ड्रेन को रोकना

(vii) आर्थिक एवं व्यापारिक संस्थाओं में स्वरूप व शैली में परिवर्तन की माँग

(आदि विशेषताओं का वर्णन) 6

21. ***विश्व राजनीति में पर्यावरण की चिंता के कारण :***

(i) कृषि योग्य भूमि में बढ़ोत्तरी न होना

(ii) स्वच्छ जल की कमी

(iii) वनों की अंधाधुन्ध कटाई

(iv) ओजोन-पर्त में छिद्र होना

(v) समुद्र-तटीय क्षेत्रों में बढ़ता प्रदूषण

(vi) रसायनों का उत्पादन

(vii) परमाणु परीक्षणों के प्रभाव

(आदि कारणों का वर्णन) 6

अथवा

वैश्वीकरण का अर्थ : वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से वस्तुओं, सेवाओं, पूँजी और विचारों का प्रवाह बिना किसी अवरोध के विभिन्न देशों में किया जा सकता है। कुछ विद्वानों ने वैश्वीकरण को राज्यों के बीच आपसी जुड़ाव तथा एक दूसरे पर निर्भरता का नाम दिया है। वैश्वीकरण समस्त विश्व को एक करने का विचार रखता है और यह समीकरण राजनीतिक सम्बन्धों और सुझावों की अपेक्षा आर्थिक सम्बन्धों और सुधारों द्वारा अधिक प्रभावशाली हो सकता है। वैश्वीकरण की विभिन्न विद्वानों ने परिभाषायेंदी हैं।

राबर्टसन के अनुसार "वैश्वीकरण विश्व एकीकरण की चेतना के प्रबलीकरण से संबंधित अवधारणा है।"

रिचर्ड फॉक के अनुसार, "वैश्वीकरण एक ऐसी अवधारणा है, जो विकसित देशों द्वारा अन्य राष्ट्रों पर थोपी गई है। इस वैश्वीकरण की प्रक्रिया के कारण समस्त विश्व एक वैश्विक गाँव में परिवर्तित हो गया है।

(अथवा किन्हीं अन्य ***दो*** विद्वानों की परिभाषायें) संक्षेप में, वैश्वीकरण राष्ट्रों की राजनीतिक सीमाओं के आर-पार लेन-देन की प्रक्रियाओं और उनके प्रबंधन का प्रवाह है। विश्व अर्थव्यवस्था में आए खुलेपन, आपसी जुड़ाव और परस्पर निर्भरता के फैलाव को वैश्वीकरण कहा जाता है।

वैश्वीकरण के उद्देश्य :

(i) पूँजी का स्वतंत्र प्रवाह

(ii) तकनीकी का स्वतंत्र प्रवाह

(iii) श्रम का स्वतंत्र प्रवाह

(iv) व्यापार अवरोधों को कम करना

(इन चारों उद्देश्यों का वर्णन दें।) 3 + 3 = 6

SET – B

---

1. ***वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर :***

(i) (ग) सिरिल रेडक्लिफ 1

(ii) (ख) सन् 1955 में 1

(iii) (घ) गुजरात 1

(iv) (क) सन् 1993 में 1

(v) (ख) प्रथम खाड़ी युद्ध 1

(vi) (ग) भारत-श्रीलंका 1

(vii) (घ) न्यूयार्क में 1

(viii) (घ) कोपनहेगन में 1

एक शब्द में उत्तर दें :

(ix) डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी 1

(x) दल-बदल से 1

(xi) धारा 370 1

(xii) 'हाथी' 1

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

(xiii) 1962 1

(xiv) 1978 1

(xv) 24 अक्टूबर 1

(xvi) विश्वव्यापी 1

अतिलघु प्रश्नों के उत्तर :

2. 'एक दलीय प्रभुत्व' उस व्यवस्था को कहते हैं, जहाँ बहुदलीय प्रणाली के होते हुए भी किसी एक दल की प्रधानता बनी रहती है। ऐसी व्यवस्था में मतदाता केवल एक ही दल को अधिक महत्त्व देते हैं। 2

3. 'मिश्रित अर्थव्यवस्था' उस व्यवस्था को कहते हैं। जब देश में निजी क्षेत्र के साथ-साथ सार्वजनिक क्षेत्र की भी व्यवस्था की जाए। ऐसी व्यवस्था न तो पूर्णरूप से समाजवादी होती है और न ही पूर्ण रूप से पूँजीवादी होती है। 2

4. (i) योजनाएँ बनाना

(ii) राष्ट्र के प्राकृतिक, भौतिक एवं मानवीय संसाधनों तथा पूँजी का अनुमान लगाना।

(iii) विभिन्न कार्यक्रमों के बीच प्राथमिकताओं का निर्धारण करना

(iv) योजनाओं की प्रगति का समय-समय पर मूल्यांकन करना

(v) आर्थिक विकास में बाधक कारकों का पता लगाना।

(आदि कार्यों में से कोई ***दो*** कार्य) 2

5. शास्त्री जी ने पाकिस्तान के साथ सन् 1966 में ताशकन्द समझौता किया था। 2

6. चिपको आन्दोलन का प्रारम्भ सन् 1972 में यू० पी० (अब उत्तराखण्ड) राज्य से हुई। 2

7. 'महिला सशक्तिकरण' का अर्थ है महिलाओं के अपने व्यक्तित्व के विकास के लिए समानता के आधार पर पूर्ण अवसर उपलब्ध कराना, जिससे वे सामाजिक जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के समान कार्य कर सकें। 2

8. शीतयुद्ध के दौरान विश्व दो गुटों में – अमेरिकन गुट और सोवियत संघ के गुट में बँटा हुआ था। इसीलिए विश्व को द्वि-ध्रुवीय कहा जाता था। परन्तु 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद एक गुट समाप्त हो गया। इसी को द्वि-ध्रुवीय विश्व का पतन कहा जाता है। 2

9. शॉक-थेरेपी मॉडल विश्व-बैंक व अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा निद्रेशित था। 2

10. यूरोपीय संघ में अभी तक 27 देश सदस्य हैं। परन्तु 2016 में ब्रिटेन ने जनमत संग्रह द्वारा इसकी सदस्यता छोड़ने का निर्णय लिया। 2

11. वैश्वीकरण विश्व, संस्कृति का पक्षधर है। विश्व संस्कृति के नाम पर पश्चिमी संस्कृति अन्य संस्कृतियों पर लादी या थोपी जा रही है। इसे ही (इस लादनें की प्रक्रिया को) सांस्कृतिक समरूपता कहते हैं। 2

लघु प्रश्नों के उत्तर : (मूल्य-बिन्दुओं के आधार पर)

12. ***स्वतंत्र भारत के सम्मुख चुनौतियाँ :***

(i) भारत को एकता के सूत्र में बाँधना

(ii) लोकतंत्र की स्थापना करना

(iii) शरणार्थियों का पुनर्वास करना

(iv) तीव्र गति से आर्थिक विकास करना

(अथवा किन्हीं अन्य ***चार*** चुनौतियों का वर्णन) 4

13. ***विदेश नीति को प्रभावित करने वाले बाहरी कारक :***

(i) अन्तर्राष्ट्रीय तत्त्व

(ii) अफ्रीकी-एशियाई देशों का नया उभरता युग

(iii) आतंकवाद

(iv) विश्व-शान्ति

(अथवा अन्य किन्हीं ***चार*** बाहरी कारणों का वर्णन) 4

14. ***आपातकाल की घोषणा के परिणाम :***

(i) प्रेस पर प्रतिबंध

(ii) आपातकाल के दौरान जनता पर अत्याचार

(iii) हड़ताल प्रदर्शन धरनों आदि पर प्रतिबन्ध

(iv) मौलिक अधिकारों का निलंबन

(अथवा कोई ***चार*** परिणामों का वर्णन) 4

15. ***क्षेत्रवाद के उत्तरदायी कारण :***

(i) भौगोलिक एवं सांस्कृतिक कारण

(ii) आर्थिक कारण

(iii) राजनीतिक कारण

(iv) अन्तर्राष्ट्रीय विवाद

(अथवा अन्य किन्हीं ***चार*** कारणों का वर्णन) 4

16. ***एकध्रवीय व्यवस्था के लाभ :***

(i) साम्यवादी व्यवस्था की उग्रता व कट्टरता का पतन होना

(ii) उदारवादी और कल्याणकारी विचारों का लोकप्रिय होना

(iii) भय तथा आतंक के दौर का अंत होना

(iv) आर्थिक और तकनीकी विकास पर बल देना

(अथवा अन्य कोई ***चार*** लाभों का वर्णन) 4

17. ***भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव के कारण*** **:**

(i) पाकिस्तान द्वारा कश्मीर का भारत में विलय स्वीकार न करना व अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर कश्मीर का मुद्दा उछालना

(iii) पाकिस्तान का अमेरिका तथा विशेषकर चीन से सैनिक सहायता प्राप्त करना, जिसका प्रयोग वह भारत के विरुद्ध करता है।

(iv) पाकिस्तान द्वारा बांग्लादेश की स्थापना के लिए भारत को जिम्मेदार मानना

(v) पंजाब, जम्मू-कश्मीर सहित सारे भारत में आतंकवादी गतिविधियों को प्रोत्साहित करना, आतंकवादियों को संरक्षण देना उनके लिए प्रशिक्षण शिविर चलाना व उन्हें आर्थिक सहायता देना, भारत विरोधी प्रचार करना व लगातार युद्ध विराम का उल्लंघन करते हुए सीमा पार से भारतीयों पर गोलीबारी करना।

(आदि अन्य कोई ***चार*** कारण) 4

18. ***सुरक्षा परिषद् के कार्य :***

(i) विश्व शान्ति और व्यवस्था को बनाए रखना, विश्व में किसी भी भाग में शान्ति भंग होने पर तुरन्त कार्रवाही करना।

(ii) अन्तर्राष्ट्रीय विवादों के शान्तिपूर्ण निबटारे के लिए कोई भी कदम उठाना।

(iii) विशेष परिस्थिति होने पर अथवा संसार में शान्ति होने पर किसी देश के विरुद्ध आर्थिक प्रतिबंध लगाना और अंतिम उपाय के रूप में शान्ति भंग करने वाले देश के विरुद्ध सैनिक कार्रवाही करना। इसके लिए सदस्य देशों से सेना माँगना, जिसके लिए सदस्य देश वचनबद्ध है। सुरक्षा परिषद्

ऐसी कार्यवाही तभी कर सकती है। जब सभी शान्तिपूर्ण उपाय असफल हो जाएँ।

(iv) संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर के संशोधन में भाग लेना।

(v) संयुक्त राष्ट्र का महासचिव सुरक्षा परिषद् की सिफारिश पर ही महासभा द्वारा चुना जाता है। यह महासभा के साथ मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश चुनती है।

(vi) सुरक्षा परिषद् की सिफारिश पर ही कोई देश U. N. O. का सदस्य बन सकता है या किसी देश की सदस्यता समाप्त की जा सकती है। (पर इसके लिए S. C. के पाँचों सदस्य देशों की सहमति आवश्यक है) आदि कार्य हैं। 4

19. ***सुरक्षा की पारम्परिक अवधारणा :*** यह सीधे-सीधे एक देश की राष्ट्रीय प्रभुसत्ता से जुड़ी हुई है, अर्थात् राष्ट्र की सीमाएँ सर्वोपरि होती है अतः उनकी रक्षा की जानी चाहिए। सुरक्षा की यह अवधारणा बहुत पुरानी है अतः इसे परम्परागत अवधारणा कहते हैं। किसी देश की बाहरी आक्रमण से सुरक्षा के लिए विद्वानों ने विभिन्न उपाय बताए हैं। जो कि ये हैं :

(i) सैन्य गठबन्धनों का निर्माण करना

(ii) शक्ति संतुलन बनाए रखना

(iii) निशस्त्रीकरण को प्रोतसाहित करना

(iv) विश्वास की बदले।

(अथवा अन्य किन्हीं ***चार*** उपायों का वर्णन) 4

निबन्धात्मक प्रश्नों के उत्तर (मूल्य-बिन्दुओं के आधार पर)

20. *गठबन्धन सरकार के भारतीय राजनीति पर प्रभाव :*

(i) राजनीतिक अस्थिरता

(ii) दल बदल को प्रोत्साहन

(iii) प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के पद की प्रतिष्ठा का ह्रास

(iv) संसदीय सिद्धान्तों के प्रतिकूल आचरण

(v) अवसरवादी प्रवृत्ति पर आधारित सरकारों का गठन

(vi) भारतीय राजनीतिक संस्कृति का क्षरण

(vii) संवैधानिक मुखिया के समान तथा प्रतिष्ठा को आघात

(आदि प्रभावों का वर्णन) 6

अथवा

शीतयुद्ध के मूलभूत कारण :

(i) विरोधी विचारधाराओं का टकराव

(ii) यूरोप में उत्पन्न शक्ति शून्यता की स्थिति में नेतृत्त्व संघर्ष

(iii) दोनों महाशक्तियों के हितों में टकराव

(iv) सुरक्षा परिषद् में निषेधाधिकार शक्ति के संदर्भ में दोनों महाशक्तियों में टकराव

(v) दोनों महाशक्तियों का विस्तारवादी दृष्टिकोण

(vi) दोनों महाशक्तियों द्वारा सैन्य सुरक्षा संधियों का सहारा लेना।

(आदि कारणों का वर्णन) 6

21. ***पर्यावरण की सुरक्षा के उपाय :***

(i) आवश्यकताओं में कमी करना।

(ii) जनसंख्या में नियंत्रण।

(iii) वन और वन्य जीवन का संरक्षण करना।

(iv) साफ सुथरी तकनीक को अपनाना।

(v) जनता को पर्यावरण सम्बन्धी शिक्षा देना।

(vi) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं समस्त विश्व की भागीदारी को बढ़ाना।

(vii) जल-प्रदूषण और वायु-प्रदूषण को रोकने संबंधी उपाय करना।

(आदि उपायों का वर्णन) 6

अथवा

वैश्वीकरण का राजनीतिक आयाम :

(i) राज्य के स्वरूप में परिवर्तन

(ii) राज्य के सीमित कार्य

(iii) राज्य की क्षमता या शक्ति में बढ़ोत्तरी

(iv) सरकारों के निर्णयों का प्रभावित होना।

(आदि का वर्णन)

वैश्वीकरण का आर्थिक आयाम :

(i) वस्तुओं, सेवाओं और पूँजी का स्वतंत्र प्रवाह होना

(ii) व्यापार में वृद्धि

(iii) व्यक्तियों की गतिशीलता

(iv) अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संस्थाओं की भूमिका में वृद्धि

(आदि का वर्णन) 6

SET – C

---

1. ***वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर :***

(i) (ग) 565 1

(ii) (घ) भारत-चीन 1

(iii) (ख) श्री जॉर्ज फर्नांडिस 1

(iv) (क) 6 दिसम्बर, 1992 को 1

(v) (ग) ऑपरेशन ईराकी फ्रीडम 1

(vi) (घ) धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र 1

(vii) (ख) पेरिस 1

(viii) (घ) रियो-डी-जनेरियो 1

एक शब्द में उत्तर दें :

(ix) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी 1

(x) श्री लाल बहादुर शास्त्री 1

(xi) तमिलनाडु 1

(xii) श्री अमित शाह 1

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

(xiii) क्यूबा मिसाइल संकट 1

(xiv) 10 1

(xv) 111 (एक सौ ग्यारह) 1

(xvi) 1995 4 × 1 = 4

अतिलघु प्रश्नों के उत्तर :

2. चुनाव उस प्रक्रिया को कहते हैं जिसके द्वारा मतदाता एक निश्चित अवधि के लिए अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं। 2

3. भारत में नियोजन का मुख्य उद्देश्य राजनीतिक स्वतंत्रता को आर्थिक आधार प्रदान करना है। इसका लक्ष्य सामाजिक एवं आर्थिक विकास है। 2

4. (i) उत्तर भारत में 1966-1967 में पड़ने वाला सूखा एवं अकाल।

(ii) उच्च गुणवत्ता वाले व उत्पादन बढ़ाने वाली किस्मों के बीजों का भारत में आना।

(अथवा अन्य कोई ***दो*** कारण) 2

5. सन् 1969 में हुआ राष्ट्रपति पद का चुनाव कांग्रेस के विभाजन का मुख्य कारण था। 2

6. सन् 1972 में बना दलित पैंथर्स संगठन। 2

7. इस आन्दोलन की शुरूआत सन् 1990 में हुई तथा इसका नेतृत्व मजदूर किसान शक्ति संगठन ने किया। 2

8. (i) राज्य द्वारा नियंत्रित अर्थव्यवस्था

(ii) राज्य द्वारा लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं की आपूर्ति 2

(अथवा अन्य कोई ***दो*** विशेषताएँ)

9. (i) पूर्व सोवियत खेमे के देशों में आर्थिक संकट उत्पन्न होना।

(ii) इन देशों में धनी और गरीब लोगों के बीच आर्थिक असमानता का अत्याधिक बढ़ना।

(अथवा अन्य कोई ***दो*** परिणाम) 2

10. चीन में साम्यवादी क्रांति सन् 1949 में श्री माओ-त्से-तुग में नेतृत्व में हुई। 2

11. आज के वैश्वीकरण के युग में कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का स्थान 'अहस्तक्षेपी राज्य' ने ले लिया है। 2

लघु प्रश्नों के उत्तर : (मूल्य-बिन्दुओं के आधार पर)

12. ***राष्ट्र-निर्माण के तत्त्व :***

(i) राष्ट्रीय स्वतन्त्रता

(ii) राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्रीय भावना

(iii) उचित सार्वजनिक सत्ता

(iv) विभिन्नता में एकता की भावना

(अथवा अन्य किन्हीं ***चार*** तत्त्वों का वर्णन) 4

13. ***पंचशील :*** पंचशील भारतीय विदेश नीति का मूल आधार है, इसका अर्थ है – पाँच सिद्धान्त। इसकी घोषणा 1954 में भारत के प्रधानमंत्री पं० नेहरु ने चीन के प्रधानमंत्री के साथ मिलकर तिब्बत मामले पर समझौता करते समय की थी। ये सिद्धान्त हैं :

(i) एक दूसरे की क्षेत्रीय अखण्डता और प्रभुसत्ता का सम्मान करना।

(ii) एक दूसरे पर आक्रमण न करना।

(iii) एक दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना।

(iv) आपस में समानता और मित्रता की भावना बनाए रखना।

(v) शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व। 4

14. ***आपाताकल की घोषणा के कारण :***

(i) आर्थिक स्थिति के प्रति जनता में असंतोष उत्पन्न होना।

(ii) गुजरात व बिहार के छात्र-आन्दोलन व श्री जय प्रकाश नारायण का सम्पूर्ण क्रांति का आह्वान करना।

(iii) 1974 की रेलवे की हड़ताल।

(iv) इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा जून 1975 में श्रीमति इंदिरा गाँधी का निर्वाचन अवैध घोषित करना।

(अथवा अन्य कोई ***चार*** कारणों का कारण) 4

15. ***क्षेत्रवाद को समाप्त करने के सुझाव :***

(i) अन्तर्राज्यीय झगड़ों का शीघ्र समाधान।

(ii) सभी क्षेत्रों का संतुलित आर्थिक विकास।

(iii) राष्ट्रीय दृष्टिकोण वाले राजनीतिक दलों का विकास।

(iv) शिक्षा प्रणाली व शैक्षणिक संस्थाओं में सुधार।

(अथवा अन्य किन्हीं ***चार*** सुझावों का वर्णन) 4

16. ***ऑपरेशन डेजर्ट स्टॉर्म :*** 1991 में प्रथम खाड़ी युद्ध को ऑपरेशन डेजर्ट स्टॉर्म कहा जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ के आधीन इराक के विरुद्ध यह सैन्य अभियान चलाया गया। इसमें अमेरिका के नेतृत्व में उपदेशों के लगभग 6 लाख 70 जहार सैनिकों ने इराकी कब्जे से कुवैत को स्वतंत्र कराने के लिए युद्ध में भाग लिया। लगभग 40 दिन की धुआँधार बमबारी के बाद जमीनी युद्ध आरम्भ हुआ। इराक की बिजली, पानी व संचार व्यवस्था पहले ही ध्वस्त हो गई थी। केवल 100 घंटे के जमीनी युद्ध में इराकी सेना परास्त हो गई। लगभग 2 लाख इराकी सैनिक बंदी बना लिये गये और कुवैत स्वतंत्र देश दुबारा बन गया। 4

17. ***सार्क देशों की समस्यायें :***

(i) सार्क देशों के बीच विद्यमान विवादित मुद्दे

(ii) सार्क देशों की विविधताएँ

(iii) दक्षिण एशिया में भारत की शक्तिशाली स्थिति

(iv) सार्क क्षेत्र में महाशक्तियों का प्रभाव

(अथवा अन्य किन्हीं ***चार*** समस्याओं का वर्णन) 4

18. ***संयुक्त राष्ट्र संघ की आवश्यकता के कारण :***

(i) विश्व शान्ति एवं सुरक्षा की स्थापना के लिए आवश्यक

(ii) सामाजिक, आर्थिक एवं मानवीय समस्याओं के निराकरण करने में सहायता करने के लिए आवश्यक

(iii) अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक

(iv) एकध्रुवीय विश्व में अमेरिका की मनमानी करने पर रोक लगाने के लिए आवश्यक

(अथवा अन्य किन्हीं ***चार*** कारणों का वर्णन) 4

19. ***विश्व की सुरक्षा के खतरे :***

(i) महामारियों

(ii) पर्यावरण प्रदूषण एवं वैश्विक तापवृद्धि

(iii) विश्वव्यापी आतंकवाद

(iv) शरणार्थी समस्या

(अथवा अन्य किन्हीं ***चार*** खतरों का वर्णन) 4

निबन्धात्मक प्रश्नों के उत्तर (मूल्य-बिन्दुओं के आधार पर)

20. ***भारतीय राजनीति पर साम्प्रदायिकता के प्रभाव :***

(i) धर्म पर आधारित राजनीति, राजनीतिक दलों व दबाव-समूहों का विकास

(ii) असहनशीलता का विकास

(iii) अलगाववादी प्रवृत्ति का विकास

(iv) चुनावों पर साम्प्रदायिकता का प्रभाव

(v) मंत्रीमण्डल के निर्माण व उच्च पदों की नियुक्ति पर साम्प्रदायिकता का प्रभाव

(vi) अल्पसंख्यकों को प्रसन्न करने की नीति

(vii) बहुसंख्यक साम्प्रदायिकता का विकास

(आदि प्रभावों का वर्णन) 6

अथवा

भारतीय गुट-निरपेक्षता की नीति का स्वरूप :

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शांति केवल तनावपूर्ण शांति थी। अमेरिका व रूस शीतयुद्ध में संलग्न थे। भारत शीतयुद्ध को

विश्वशान्ति व सुरक्षा के लिए खतरनाक समझता था अतः भारत ने गुट-निरपेक्षता की नीति अपनाई जो शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व और विभिन्न देशों के आपसी सहयोग पर आधारित थी। दूसरे देशों ने भी इस नीति का स्वागत गुट-निरपेक्ष आंदोलन में शामिल होकर किया इस नीति की निम्न विशेषतायें हैं, जो इसके स्वरूप को स्पष्ट करती है :

(i) सैनिक संधियों व गठबंधनों का विरोध

(ii) पंचशील गुट-निरपेक्षता की आधार-शिला

(iii) राष्ट्रीय हित की प्राप्ति का साधन

(iv) शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व तथा अहस्तक्षेप की धारणा में विश्वास

(v) साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, जातिवाद तथा रंगभेद का विरोध करना

(vi) शस्त्रीकरण के पक्ष में नहीं है

(आदि विशेषताओं का वर्णन) 6

21. ***पर्यावरण संरक्षण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किए गए प्रयास :***

पर्यावरण एक विश्वस्तरीय समस्या, इसका सभी राष्ट्रों पर प्रभाव पड़ना, इसके समाधान के लिए विकसित व विकासशील देशों में सहयोग किया जाना आवश्यक, विभिन्न देशों के अलग-अलग और लघु प्रयासों की अपेक्षा समग्र प्रयास की आवश्यकता, पर्यावरण की समस्या के समाधान के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किए गए प्रयास निम्नलिखित हैं :

(1) ***मानव पर्यावरण पर स्टाकहोग सम्मेलन 1972 :*** इसका प्रमुख उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवीय पर्यावरण के संरक्षण व सुधार की विश्वव्यापी समस्या का निदान करना था। इसमें 119 देशों ने पहली बार 'एक ही पृथ्वी का सिद्धान्त स्वीकार किया। स्टाकहोम घोषणा पत्र के प्रमुख सिद्धान्त :

(i) मानवीय पर्यावरण पर घोषणा

(ii) मानवीय पर्यावरण के लिए कार्य योजना

(iii) विश्व पर्यावरण दिवस घोषित किए जाने का प्रस्ताव

(iv) परमाणु शस्त्रों के परीक्षण पर प्रस्ताव

(आदि घोषणाएँ)

(2) ***हैबिटाट सम्मेलन 1976 :*** इसमें घोषणा की गई कि राष्ट्रों को इस विश्व के महासागरों को प्रदूषण से बचाना चाहिए।

(3) ***नैरोबी सम्मेलन 1977 :*** रेगिस्तान को दूर करने व सीमित करने के लिए एक ऐसी कार्य-योजना को स्वीकार करना जिसमें 26 सिफारिशें स्वीकार करना।

(4) ***1982 का नैरोबी सम्मेलन :*** 105 देशों का इसमें शामिल होना, इस बात पर सहमति होना कि पर्यावरण को जितना खतरा गरीबी से, उतना ही उपभोक्ता वस्तुओं और उपयोग के तरीकों से, पर्यावरण की क्षति के निवारण को प्राथमिकता देना।

(5) ***पृथ्वी सम्मेलन 1992 :*** ब्राजील की राजधानी रियो-डी जेनेरियो में पर्यावरण व उसके विनाश पर संयुक्त राष्ट्र संघ का सम्मेलन, जिसमें 182 देशों में भाग लिया।

इसके विचारणीय विषय थे :

(i) विश्व को प्रदूषण से बचाने के लिए वित्तीय प्रबंध

(ii) वनों का प्रबन्ध

(iii) संस्थागत प्रबंध

(iv) तकनीक का अंतरण

(v) जैविक विभिन्नता तथा सतत् विकास

(6) ***अन्य सम्मेलन :*** द्वितीय हैबिटाट सम्मेलन 1996, क्योटो सम्मेलन 1997, द्वितीय पृथ्वी सम्मेलन 2002, मुख्य हैं। 6

अथवा

वैश्वीकरण के उदय के कारण : वैश्वीकरण की अवधारणा कोई नई अवधारणा नहीं, सदियों से संसार में वस्तुओं, विचारों व व्यक्तियों का आना-जाना होता है। परन्तु बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में एक नए प्रकार के वैश्वीकरण का उदय हुआ। इसके निम्न कारण हैं :

(i) साम्यवादी व्यवस्था का पतन

(ii) एक-ध्रुवीय विश्व की स्थापना

(iii) संचार क्रांति व तकनीकी विकास

(iv) राष्ट्रों की पारस्परिक निर्भरता

(v) आर्थिक विकास के लिए आवश्यक

(vi) विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का विश्वव्यापी प्रभाव

(vii) साम्राज्यवाद विरोधी भावनाओं का प्रभाव

(आदि कारणों का वर्णन करें।) 3 + 3 = 6

SET – D

1. ***वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर :***

(i) (ग) गोवा 1

(ii) (क) पं० जवाहर लाल नेहरु 1

(iii) (क) मई, 1977 में 1

(iv) (ग) सोलहवाँ चुनाव 1

(v) (ख) बराक ओबामा 1

(vi) (घ) चीन 1

(vii) (क) डॉ० नगेन्द्र सिंह 1

(viii) (ख) 30 करोड़ 1

एक शब्द में उत्तर दें :

(ix) श्री नसीम जैदी 1

(x) श्रीमति इंदिरा गाँधी 1

(xi) सन् 1966 में 1

(xii) सन् 2004 में 1

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

(xiii) शीतयुद्ध 1

(xiv) माओ-त्से-तुंग 1

(xv) पाँच 1

(xvi) नैरोबी 1

अतिलघु प्रश्नों के उत्तर :

2. कांग्रेस पार्टी की स्थापना सन् 1885 में हुई। इसके मुख्य संस्थापक एक अंग्रेज अधिकारी ए० ओ० ह्यूम थे। 2

3. स्वतंत्रता के समय भारत की अर्थव्यवस्था पिछड़ी हुई गरीबी और कृषि पर आधारित थी जिसमें प्रति व्यक्ति आय संसार के राज्यों में न्यूनतम स्तर पर थी। 2

4. सन् 2015 में योजना आयोग की जगह नीति-आयोग बनाया गया और श्री अरविन्द पनगढ़िया को इसका उपाध्यक्ष बनाया गया। 2

5. हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर-प्रदेश। 2

6. ***पर्यावरण आन्दोलन :***

(i) चिपको आंदोलन

(ii) नर्मदा बचाओ आंदोलन 2

7. पश्चिम बंगाल, आँध्र प्रदेश तथा बिहार के कुछ भागों में किसान तथा खेतिहर मजदूरों द्वारा आर्थिक अन्याय तथा असमानता के विरोध में चलाया गया आंदोलन नक्सलवादी आन्दोलन कहलाता है। 2

8. द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में उभरी दो महाशक्तियों-अमेरिका एवं सोवियत संघ द्वारा अपनी-अपनी उच्च सैनिक क्षमता तथा गठबंधन के बल पर विश्व को दो भागों-पूँजीवादी एवं साम्यवादी गुटों में बाँटने की प्रक्रिया एवं काल को द्विध्रुवीयता का नाम दिया जाता है। 2

9. (i) निजी स्वामित्व एवं निजी संपत्ति के सिद्धान्त पर

(ii) मुक्त व्यापार के सिद्धान्त पर 2

10. यूरोपीय संघ की मुद्रा का नाम 'यूरो' है। इसका प्रचलन सन् 2002 में शुरू हुआ। 2

11. विश्वव्यापी जुड़ाव का अर्थ उस भावना से है जो लोगों को आपस में जुड़े होने का अहसास कराती है अर्थात् यह लोगों में उस चेतना का विकास करती है कि वे आपस में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। 2

लघु प्रश्नों के उत्तर : (मूल्य-बिन्दुओं के आधार पर)

12. ***राष्ट्र निर्माण के बाधक तत्त्व :***

(i) जातिवाद एवं भाषायी उन्माप

(ii) साम्प्रदायिकता

(iii) राजनीतिक अवसरवादिता

(iv) क्षेत्रवाद एवं क्षेत्रीय दल

(अथवा अन्य किन्हीं ***चार*** बाधक तत्त्वों का वर्णन) 4

13. ***भारत की विदेश नीति के मुख्य सिद्धान्त :***

(i) गुट-निरपेक्षता

(ii) पंचशील

(iii) निशस्त्रीकरण

(iv) उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद का विरोध

(अथवा अन्य किन्हीं ***चार*** सिद्धान्तों का वर्णन) 4

14. ***वचनबद्ध न्यायपालिका :***

(i) वचनबद्ध न्यायपालिका से अभिप्राय ऐसी न्यायपालिका से है जो एक दल विशेष या सरकार विशेष के प्रति वफादार हो तथा उसके आदेशों एवं निर्देशों के अनुसार चलती हो। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सामाजिक न्याय प्राप्त करने के उद्देश्य से 'स्वतंत्र न्यायपालिका' बनाई गई और न्यायपालिका ने भी संविधान में निहित उद्देश्यों में अनुरूप स्वतंत्र निष्पक्ष एवं उत्तरदायी न्यायपालिका के रूप में कार्य किया लेकिन प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गाँधी ने अपने 'सामाजिक विकास के उद्देश्य' के अन्तर्गत न्यायपालिका की स्थिति वचनबद्धता की ओर अग्रसर कर दी जब उन्होंने 1973 में सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के पद पर तीन वरिष्ठ न्यायाधीशों श्री शैलेट, श्री हेगेड़, श्री ग्रोवर की उपेक्षा करके श्री ए० एन० रे को नियुक्त किया। तीनों वरिष्ठ न्यायाधीशों ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। इससे यह प्रश्न उठने लगा कि न्यायपालिका को स्वतंत्र होना चाहिए या वचनबद्ध। परन्तु आपातकाल की घोषणा की समाप्ति के बाद भारत में पुनः न्यायपालिका की स्वतंत्रता कायम हो गई। 4

15. ***क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के विकास का कारण :***

(i) भौगोलिक कारण

(ii) राजनीतिक कारण

(iii) जातीय एवं धार्मिक कारण

(iv) आर्थिक कारण

(अथवा अन्य किन्हीं ***चार*** कारणों का वर्णन) 4

16. ***अमेरिकी वर्चस्व से निबटने के सुझाव :***

(i) भारत चीन एवं रूस को मिलकर एक शक्तिशाली गठजोड़ बनाना चाहिए।

(ii) शक्तिशाली देश और यूरोपीय संघ व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाएँ।

(iii) विभिन्न देश अपने आपसी संबंधों में गुणात्मक सुधार लाएँ और अपने-अपने संसाधनों का समुचित प्रयोग करके आत्म निर्भर बने।

(iv) राज्य से इतर संस्थाएँ-जैसे कलाकार, बुद्धिजीवी, मीडिया, नागरिक आंदोलन आदि भी अमेरिकी वर्चस्व को चुनौती देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। 4

17. ***दक्षेस को सफल बनाने के सुझाव*** **:**

(i) द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देने का प्रयास

(ii) संघर्ष के आपसी मुद्दों को टालने की जगह आपसी विचार-विमर्श के द्वारा समाधान करने का प्रयास।

(iii) सांस्कृतिक संपर्क एवं पर्यटन को बढ़ावा देने का प्रयास।

(iv) महाशक्तियों को सार्क देशों के क्षेत्र से दूर रखने का प्रयास।

(आदि अन्य कोई ***चार*** सुझाव) 4

18. ***संयुक्त राष्ट्र संघ को सफल बनाने के सुझाव :***

(i) सुरक्षा परिषद् के ढाँचे, सदस्यता और कार्य विधि में सुधार की आवश्यकता

(ii) लोकतांत्रिक कोष की स्थापना

(iii) संयुक्त राष्ट्र संघ की अपनी सेना रखने का प्रस्ताव

(iv) चार्टर की व्याख्या की आवश्यकता

(अथवा अन्य कोई ***चार*** सुझाव) 4

19. ***शक्ति संतुलन :*** विश्व राजनीति की एक बड़ी सच्चाई है कि शक्ति का बँटवारा बराबर नहीं है। कुछ देश अधिक शक्तिशाली हैं तो कुछ कमजोर है। इस कारण अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अशांति या युद्ध की स्थिति बन जाती है। अतः विश्व शांति एवं सुरक्षा के लिए शान्ति संतुलन की आवश्यकता होती है। शक्ति संतुलन परम्परागत सुरक्षा नीति का एक तत्त्व है। साधारण शब्दों में बड़े राष्ट्रों में

शक्ति संचय करने, यथास्थिति को बनाए रखने अथवा अपने पक्ष में करने की प्रबल इच्छा के कारण अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एक समाकृति बनती है इसे शक्ति संतुलन कहते हैं। क्लाड के अनुसार शक्ति संतुलन एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें विभिन्न राष्ट्र अपने पारस्परिक शक्ति संबंधों को बिना किसी बड़ी शक्ति के हस्तक्षेप के स्वतंत्रतापूर्वक संचालित करते हैं।

(अथवा किसी अन्य विद्धान की परिभाषा)

दूसरे शब्दों में शक्ति संतुलन को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की एक स्थिति, एक प्रक्रिया, एक नीति और एक व्यवस्था के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। शक्ति संतुलन स्थापित करने के लिए शक्ति संचय करना, संधियाँ करना, भेद नीति को अपनाना, गठबंधन करना आदि तरीकों को अपनाया जाता है। 4

निबन्धात्मक प्रश्नों के उत्तर (मूल्य-बिन्दुओं के आधार पर)

20. ***गठबंधन सरकार की उत्पत्ति के कारण :***

(i) राजनीतिक दलों की निष्क्रियता

(ii) क्षेत्रीय दलों की बढ़ती संख्या एवं भूमिका

(iii) समाज में मूलभूत परिवर्तन आना

(iv) राजनीतिक दलों का गिरता स्तर

(v) राजनीतिक दलों की मूल विचारधाराओं में उत्पन्न विकृतियाँ

(vi) बहुमत पर आधारित शासन में जनता का अविश्वास होना

(आदि कारणों का वर्णन) 6

अथवा

गुट-निरपेक्ष आंदोलन के मुख्य सिद्धान्त : गुट-निरपेक्षता का अर्थ है कि विभिन्न शक्ति गुटों से अलग रहते हुए, प्रत्येक अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न का स्वतन्त्र निर्णय करना। इसके मुख्य सिद्धान्त हैं :

(i) गुट-निरपेक्ष देशों की राष्ट्रीय स्वतंत्रता, प्रभुसत्ता, क्षेत्रीय अखंडता और सुरक्षा की रक्षा करना।

(ii) साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, रंग, जाति, नस्ल आदि पर आधारित भेदभाव, विस्तारवाद आदि का उन्मूलन करना।

(iii) विदेशी पराधीनता के खिलाफ संघर्ष कर रहे देशों के राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन का समर्थन करना।

(iv) अन्तर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा की रक्षा करना और तनावों को कम करने का प्रयास करना।

(v) निशस्त्रीकरण का प्रयास करना व परमाणुशस्त्रों की होड़ को समाप्त करना।

(vi) विकसित और विकासशील देशों के बीच की असमानता को समाप्त करना और इन देशों में गरीबी, भुखमरी, बीमारी, निरक्षरता की समाप्ति का प्रयास करना।

(vii) शक्ति प्रयोग की धमकी देने या अन्य देशों में आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने की प्रवृति को रोकना

(viii) संयुक्त राष्ट्र संघ को मजबूत बनाना और राष्टों के बीच समानतापूर्ण आर्थिक संबंधों की स्थापना करना।

(ix) सैनिक संधियों तथा गठबंधनों का विरोध करना।

(x) गुट-निरपेक्ष देशों के बीच एकता, एकजुटता और सहयोग को बढ़ावा देना। 6

21. ***संसाधनों की विश्व राजनीति में भूमिका :*** साधारण शब्दों में संसाधनों की भू-राजनीति का अर्थ है किसको कब, क्या और कहाँ तथा कैसे संसाधन प्राप्त होंगे। प्राकृतिक संसाधन और खनिज पदार्थ विश्व राजनीति का केन्द्र रहे हैं और आज भी हैं। संसाधनों की मात्रा सीमित है और बँटवारा भी समान नहीं है। कुछ देशों के पास संसाधन बहुतायत में है कुछ के पास नाममात्र के हैं। इसीलिए प्रत्येक देश इन्हें पाने का प्रयास करता है। संसाधनों के संबंध में सभी राष्ट्रों में खींचातानी बनी रहती है, विभिन्न देशों में इस पर

नियंत्रण के लिए संधियाँ व समझौते होते हैं और युद्ध भी होता है यही संसाधनों के लिए विश्व राजनीति है। यह निम्न प्रकार का है :

(i) ***इमारती लकड़ी के लिए विश्व राजनीति :*** बीसवीं शताब्दी से प्रारम्भ तक किसी देश की आधार उसकी नौसैनिक शक्ति होना युद्ध-पोतों व किश्तियों के निर्माण के लिए लकड़ी की आवश्यकता, अफ्रीका एशिया व लेटिन अमेरिका में अधिकांश प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध होना, अतः यूरोपीय देशों द्वारा इन पर प्रभुत्व जमाना, भारत में इंग्लैण्ड के प्रभुत्व का कारण उनका यहाँ के संसाधनों पर कब्जा जमाना। ब्रिट्रेन की नौसेना का विश्व की सर्वोच्च नौसेना होने के कारण अधिकांश देशों पर ब्रिटेन का कब्जा होना व अपना व्यापार चमकाना।

(ii) ***तेल पर विश्व-राजनीति :*** प्रथम विश्व-युद्ध के दौरान तेल का विश्व-राजनीति में प्राथमिकता पाना 20वीं शताब्दी की अर्थ व्यवस्था का तेल पर निर्भर होना। तेल का खाड़ी देशों में व्यापक भंडार होना पश्चिमी देशों व अमेरिका की तेल भंडार पर नियंत्रण करने की इच्छा, इस कारण 1991 में पहला खाड़ी युद्ध व 2003 में अमेरिका का इराक पर आक्रमण करना। सऊदी अरब, इराक व कुवैत के पस अधिक तेल भंडार होना। तेल की आपूर्ति के लिए सभी देशों का इनसे मैत्रीपूर्ण संबंध रखना।

(iii) ***पानी पर विश्व राजनीति :*** विश्व के कुछ भागों में साफ पानी की कमी होना, पानी की कमी को कुछ विद्वानों द्वारा आने वाले समय में जल संघर्ष की चेतावनी देना। आज भी अनेक देशों में पानी के लिए विवाद-जैसे भारत-पाक में सिंधु नदी को लेकर, भारत बांग्लादेश में बह्मपुत्र व गंगा नदी को लेकर, तुर्की, सीरिया व इराक में फरात नदी के पानी को लेकर विवाद। भारत में ही कर्नाटक व तमिलनाडु में कावेरी नदी विवाद, हरियाणा व पंजाब में जल विवाद आदि प्रमुख हैं।

निष्कर्ष : संसाधन किसी देश की अर्थ व्यवस्था को मजबूती देते हैं। अतः प्रत्येक देश संसाधनों पर अपना नियंत्रण चाहता है और इसी के आधार पर अपनी विदेश नीति तैयार करता है। यही संसाधनों की विश्व-राजनीति है। 6

अथवा

वैश्वीकरण के पक्ष में तर्क :

(i) राष्ट्रों का संतुलित विकास

(ii) सहचर्य एवं समानता की भावना

(iii) विश्व शान्ति को प्रोत्साहन

(iv) वैश्विक समस्याओं का सुगमता से हल

(v) ज्ञान की सम्यक भागीदारी

(vi) यातायात एवं व्यापार संबंधी गतिविधियों में अभिवृद्धि

(vii) विभिन्न संस्कृतियों में मेल-जोल

(आदि तर्कों का वर्णन दीजिए।) 6